/8 5 HARYANA GOVT. GAZ., JULY 2, 1985 (ASAR. 11, 1907 SAKA)

सं.श्रो.वि./पानीपत/46-85/22234.→-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैंनेजिंग डायरैक्टर, दी करनाल सैन्ट्रल को-ग्रोप्रेटिव बैंक लि०, करनाल के श्रमिक श्री मांगे राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भामले में कोई भोदोगिक विवाद है;

मीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनगंय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रन, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (य) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों कर प्रयोग करते हुये, हिस्सिणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-धम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अशीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्त्राला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री मांगे राम की सेवाओं का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है ?

सं. श्रो.वि./सिरसा/22240.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि दी सिरसा सैन्ट्रल कोप० वैंक लि0 सिरसा, के श्रीमक श्री बलवंत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के वींच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेसु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, भोटोगिक विधाद मधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तमों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस. ग्रो.(ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला भ्यायिवणंय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :——

क्या श्री वलवंत सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है। यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. मो.वि./हिसार/77-84/22246.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चन्डीगढ़ (1) (2) हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा, के श्रीमक श्री महावीर सिंह, परिचालक नं∘ 91 तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीशीमिक विधाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इंसलिए, ग्रंब, भीबोगिक विवाद मिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हुरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रविसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32373, दिनांक 6 नवम्बरं, 1970, के साथ पठित सरकारी ग्रविसूचना सं. 3864-ए.एस. ग्रो.(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रविनियम की धारा 7 के प्रधीन पठित श्रम न्यापालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचें लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रक्षित श्रीक में बीच या तो विवादग्रस्त मामला है :--

क्या श्री महाबीर सिंह परिचालक नं 91 की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. म्रो.वि./ग्रम्वाला/15-85/22252.—चूंकि क्षरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, कैथल, जिला कुरुक्षेत्र के श्रमिक श्री मेवा सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई घौधोणिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1)के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे जिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री मेवा सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ब्रो. वि./ग्रम्बाला/22259.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मनेजिंग डायरैक्टर, हरियाणा लघु सिंचाई नलकून निगम, चण्डीगढ़ (2) कार्यकारी श्रिभयन्ता, ड्रिलिंग एण्ड डिवैलपमैंट डिविजन, माडल टाऊन, सम्बाला शहर के श्रमिक श्री सुरेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मन, मोबोगिक निवाद मिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी घिधसूचना सं. 3(44)84-3श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को निवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निविष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो निवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मथना संबंधित मामला है:—

क्या श्री सुरेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

दिनांक 3 जून, 1985

सं. मो. वि./एफ. डी.-2/152-84/23944.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. भारत पैकेंजिंग इण्डस्ट्रीज फरीदाबाद, के श्रमिक श्रीमती मंगा देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 5415—3—श्रम-68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिष्ठिनयम की घारा 7 के श्रष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्रीमित मंगा देवी की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि वि (एफ. डी.-2/152-84/23951.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं भारत पकेंजिंग इन्डस्ट्रीज, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्याम पदो मण्डल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछ नीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना छं० 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना छं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त भ्रिधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संविच्छत नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबन्धित मामला है :---

क्या श्री श्याम पदो मण्डल की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहुत का इकदार है?